9 हरिवंशराय बच्चन

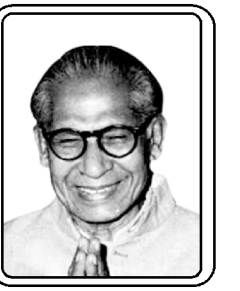

कवि : एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म**–27 नवंबर, 1907 ई0।
- **जन्म-स्थान**–प्रयागराज।
- **पिता**–प्रताप नारायण।
- **मृत्यु**–18 जनवरी, सन् 2003 ई0।
- **भाषा**–खड़ीबोली।
- **शैली**–भावात्मक गीत शैली।

जीवन-परिचय–हरिवंशराय बच्चन का जन्म प्रयागराज में मार्गशीर्ष कृष्ण 7, संवत् 1964 वि0 (सन् 1907 ई0) में हुआ। इन्होंने काशी और प्रयागराज में शिक्षा प्राप्त की। कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से इन्होंने डॉक्टरेट की। कुछ समय ये प्रयाग विश्वविद्यालय में अध्यापक रहे और फिर दिल्ली स्थित विदेश मन्त्रालय में कार्य किया और वहीं से अवकाश ग्रहण किया।

बच्चन उत्तर छायावादी काल के आस्थावादी कवि थे। इनकी कविताओं में मानवीय भावनाओं की सामान्य एवं स्वाभाविक अभिव्यक्ति हुई है। सरलता, संगीतात्मकता, प्रवाह और मार्मिकता इनके काव्य की विशेषताएँ हैं और इन्हीं से इनको इतनी अधिक लोकप्रियता प्राप्त हुई। बच्चन जी को उनकी आत्मकथा के लिये भारतीय साहित्य के सर्वोच्च पुरस्कार '**सरस्वती सम्मान-1991**' से सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त इन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार, **सोवियत लैण्ड नेहरू** पुरस्कार तथा एफ्रो-एशियन राइटर्स कान्फ्रेन्स का **लोटस पुरस्कार** भी प्राप्त हुआ है। राष्ट्रपति ने भी इन्हें **पद्मभूषण** से अलंकृत किया। 18 जनवरी, सन् 2003 ई0 में बच्चनजी का निधन हो गया।

रचनाएँ–आरम्भ में बच्चन जी उमर खैयाम के जीवन-दर्शन से बहुत प्रभावित रहे। इसी ने इनके जीवन को मस्ती से भर दिया। इनकी काव्य-कृतियों में प्रमुख हैं—'**मधुशाला**', '**निशा निमन्त्रण**', '**प्रणय पत्रिका**', '**मधुकलश**', '**एकान्त संगीत**', '**सतरंगिणी**', '**मिलन यामिनी**', '**बुद्ध का नाचघर**', '**त्रिभंगिमा**', '**आरती और अंगारे**' तथा '**जाल समेटा**'। मधुशाला, मधुबाला, हाला और प्याला को इन्होंने प्रतीकों के रूप में स्वीकार किया।

साहित्यिक सेवाएँ–पहली पत्नी की मृत्यु के बाद घोर विषाद और निराशा ने इनके जीवन को घेर लिया। इसके स्वर हमको 'निशा-निमन्त्रण' और 'एकान्त संगीत' में सुनने को मिलते हैं। इसी समय से इनके हृदय की गम्भीर वृत्तियों का विश्लेषण आरम्भ हुआ, किन्तु 'सतरंगिणी' में फिर नीड़ का निर्माण किया गया और जीवन का प्याला एक बार फिर उल्लास और आनन्द के आसव से छलकने लगा। बच्चन वास्तव में व्यक्तिवादी कवि रहे हैं। 'बंगाल का काल' तथा इसी प्रकार की अन्य रचनाओं में इन्होंने अपने जीवन के बाहर विस्तृत जनजीवन पर भी दृष्टि डालने का प्रयत्न किया। इन परवर्ती रचनाओं में कुछ नवीन विषय भी उठाये गये और कुछ अनुवाद भी प्रस्तुत किये गये। इनमें कवि की विचारशीलता तथा चिन्तन की प्रधानता रही। वास्तव में इनकी कविताओं में राष्ट्रीय उद्‌गारों, व्यवस्था में व्यक्ति की असहायता और बेबसी के चित्र दिखायी पड़ते हैं।

भाषा एवं शैली–परवर्ती रचनाओं में कवि की वह भावावेशपूर्ण तन्मयता नहीं है, जो उसकी आरम्भिक रचनाओं में पाठकों और श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध करती रही। इन्होंने सरस खड़ीबोली का प्रयोग किया है। शैली भावात्मक गीत शैली है, जिसमें लाक्षणिकता और संगीतात्मकता है। ♦

पथ की पहचान

पूर्व चलने के बटोही,
बाट की पहचान कर ले।

(1)

पुस्तकों में है नहीं
छापी गयी इसकी कहानी,
हाल इसका ज्ञात होता
है न औरों की जबानी,
अनगिनत राही गये इस
राह से, उनका पता क्या,
पर गये कुछ लोग इस पर
छोड़ पैरों की निशानी,
यह निशानी मूक होकर
भी बहुत कुछ बोलती है,
खोल इसका अर्थ, पंथी,
पंथ का अनुमान कर ले।
पूर्व चलने के बटोही,
बाट की पहचान कर ले।

(2)

यह बुरा है या कि अच्छा,
व्यर्थ दिन इस पर बिताना
अब असंभव, छोड़ यह पथ
दूसरे पर पग बढ़ाना,
तू इसे अच्छा समझ,
यात्रा सरल इससे बनेगी,
सोच मत केवल तुझे ही
यह पड़ा मन में बिठाना,
हर सफल पंथी, यही
विश्वास ले इस पर बढ़ा है,
तू इसी पर आज अपने
चित्त का अवधान कर ले।
पूर्व चलने के बटोही,
बाट की पहचान कर ले।

(3)

है अनिश्चित किस जगह पर
सरित, गिरि, गह्वर मिलेंगे,
है अनिश्चित, किस जगह पर
बाग, बन सुन्दर मिलेंगे।

किस जगह यात्रा खतम हो
जायगी, यह भी अनिश्चित,

है, अनिश्चित, कब सुमन, कब
कंटकों के शर मिलेंगे,
कौन सहसा छूट जायेंगे,
मिलेंगे कौन सहसा
आ पड़े कुछ भी, रुकेगा
तू न, ऐसी आन कर ले।

पूर्व चलने के बटोही,
बाट की पहचान कर ले।

(4)

कौन कहता है कि स्वप्नों
को न आने दे हृदय में,
देखते सब हैं इन्हें
अपना उमर, अपने समय में,

और तू कर यत्न भी तो
मिल नहीं सकती सफलता,

ये उदय होते, लिए कुछ
ध्येय नयनों के निलय में,
किन्तु जग के पंथ पर यदि
स्वप्न दो तो सत्य दो सौ,
स्वप्न पर ही मुग्ध मत हो,
सत्य का भी ज्ञान कर ले।

पूर्व चलने के बटोही,
बाट की पहचान कर ले।

(5)

स्वप्न आता स्वर्ग का, दृग-
कोरकों में दीप्ति आती,
पंख लग जाते पगों को,
ललकती उन्मुक्त छाती,

रास्ते का एक काँटा
पाँव का दिल चीर देता,

रक्त की दो बूँद गिरतीं,
एक दुनिया डूब जाती,
आँख में हो स्वर्ग लेकिन
पाँव पृथ्वी पर टिके हों,
कंटकों की इस अनोखी
सीख का सम्मान कर ले।

पूर्व चलने के बटोही,
बाट की पहचान कर ले।

(बच्चन : 'सतरंगिणी' से)

अभ्यास प्रश्न

● विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. निम्नलिखित पद्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए तथा काव्य-सौन्दर्य भी स्पष्ट कीजिए—
   (क) पुस्तकों में ..... की जबानी।
   (ख) है अनिश्चित ..... सुन्दर मिलेंगे।
   (ग) कौन कहता है कि .....बाट की पहचान कर ले।
   (घ) स्वप्न आता ..... चीर देता।
   (ङ) आँख में हो स्वर्ग .....पहचान कर ले।
2. हरिवंशराय बच्चन का जीवन-परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए।
3. बच्चन जी की साहित्यिक विशेषताओं एवं भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।
4. हरिवंशराय बच्चन का जीवनवृत्त लिखकर उनके साहित्यिक योगदान का उल्लेख कीजिए।
5. हरिवंशराय बच्चन की जीवनी का उल्लेख करते हुए उनकी रचनाओं और शैली पर प्रकाश डालिए।
6. हरिवंशराय बच्चन का जीवन-परिचय लिखिए तथा उनकी काव्यगत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

● लघु उत्तरीय प्रश्न

1. बटोही को चलने के पूर्व बाट की पहचान करने की सलाह कवि किस अभिप्राय से देता है?
2. यात्रा सुगम और सफल होने के लिए कवि क्या सुझाव देता है?
3. यात्रा में विघ्न-बाधाओं को किन प्रतीकों से बतलाया गया है?
4. *'स्वप्न पर ही मुग्ध मत हो, सत्य का भी ज्ञान कर ले'* कहने का क्या तात्पर्य है?
5. कवि 'आदर्श और यथार्थ के समन्वय' पर किन पंक्तियों द्वारा बल देता है और उसके लिए किस वस्तु का उदाहरण प्रस्तुत कर रहा है?
6. 'पथ की पहचान' शीर्षक कविता का सारांश लिखिए।
7. 'पथ की पहचान' कविता में कवि ने क्या सन्देश दिया है? संक्षेप में लिखिए।

● अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. हरिवंशराय बच्चन किस युग के कवि हैं?
2. बच्चन जी की किन्हीं दो रचनाओं के नाम लिखिए।
3. मधुशाला किसकी रचना है?
4. बच्चन जी की भाषा पर प्रकाश डालिए।
5. बच्चन जी ने अपनी भाषा में किस शैली का प्रयोग किया है?
6. मधुशाला की विषय-वस्तु क्या है?
7. बच्चन जी ने मधुशाला, मधुबाला, हाला और प्याला को किस रूप में स्वीकार किया है?
8. 'पथ की पहचान' शीर्षक कविता का केन्द्रीय भाव लिखिए।
9. 'पथ की पहचान' कविता का उद्देश्य क्या है?

● काव्य-सौन्दर्य एवं व्याकरण-बोध

1. निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए—
   (अ) पूर्व चलने के बटोही, बाट की पहचान कर ले।
   (ब) रास्ते का एक काँटा, पाँव का दिल चीर देता।
2. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार का नाम लिखिए—
   (अ) रक्त की दो बूँद गिरती एक दुनिया डूब जाती।
   (ब) है अनिश्चित, किस जगह पर बाग, बन सुन्दर मिलेंगे।

● आन्तरिक मूल्यांकन

(1) यात्रा में विघ्न-बाधाओं की ओर कवि ने संकेत किया है। आप अपनी किसी यात्रा का अनुभव लिखिए।
(2) हरिवंशराय बच्चन की काव्य कृतियों की एक सूची तैयार कीजिए। ♦